✺ 30 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] श्रीमत पर राजधानी स्थापन करने में मददगार बनने वाले बच्चों के लिए गैरन्टी है कि उन्हें कभी काल नहीं खा सकता। सतयुगी राजधानी में कभी अकाले मृत्यु नहीं हो सकती है।

2] भक्ति भी पहले सतोप्रधान थी। जब एक सत् शिवबाबा को याद करते थे। थे भी बहुत थोड़े। दिन-प्रतिदिन वृद्धि बहुत होनी है। विलायत में जास्ती बच्चे पैदा करते हैं तो उनको इनाम मिलता है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। सृष्टि की बहुत वृद्धि हो चुकी है, अब पवित्र बनो।

3] उस सतयुगी राजाई को भी तुम ही जानते हो, जब सतयुग है तो त्रेता नहीं, त्रेता है तो द्वापर नहीं, द्वापर है तो कलियुग नहीं। अब कलियुग भी है, संगमयुग भी है। भल तुम बैठे पुरानी दनिया में हो परन्तु बुद्धि से समझते हो हम संगमयुगी हैं। संगमयुगी किसको कहा जाता है– यह भी तुम जानते हो। पुरूषोत्तम वर्ष, पुरूषोत्तम मास, पुरूषोपत्तम दिन भी इस पुरूषोत्तम संगम पर ही होता है।

4] बाप कितना प्रेम से पढ़ाते हैं। वह है ईश्वर, शान्ति देने वाला। कितना उनसे सुख मिलता है। एक ही गीता सुनाकर पतितों को पावन बना देते हैं। प्रवृत्ति मार्ग भी चाहिये ना। मनुष्यों ने कल्प की आयु लाखों वर्ष कह दी है, फिर तो अनगिनत मनुष्य हो जाते। कितनी भूल की है। यह नॉलेज तुमको अभी मिलती है फिर प्राय: लोप हो जाती है।

5] यहाँ ईश्वरीय परिवार है। शान्तिधाम में भाई-भाई रहते हैं। यहाँ है भाई-बहन क्योंकि यहाँ पार्ट बजाना है तो भाई-बहन चाहिये। सतयुग में तुम ही आपस में भाई-बहन थे। उनको कहा जाता है अद्वेत राजधानी।

✺ योग-

1] इस रचना का आदि, मध्य, अन्त क्या हैं, ड्युरेशन कितना है, यह तुम ही जानते हो। वह सब हैं शूद्र, तुम हो ब्राह्मण। तुम भी जानते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। कोई गफ़लत करते हैं तो उनके रजिस्टर से दिखाई पड़ता है कि पढ़ाई कम की है। कैरेक्टर्स का रजिस्टर होता है। यहाँ भी भी रजिस्टर होना चाहिए। यह है याद की यात्रा, जिसका कोई को भी पता नहीं है। सबसे मुख्य सब्जेक्ट है याद की यात्रा।

✺ धारणा-

1] अपने को देवता धर्म का समझते नहीं है। जो जिनकी पूजा करते हैं, वह उस धर्म के हैं ना। यह समझ नहीं सकते कि हम आदि सनात देवी-देवता धर्म के हैं। उनकी ही वंशावली हैं। यह बाप ही समझाते हैं। बाप कहते हैं तुम पावन थे, फिर तमोप्रधान बन पड़े हो, अब पावन सतोप्रधान बनना है।

2] पढ़ाई में कोई गफ़लत नहीं करनी है। इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर पुरूषोत्तम बनना और बनाना है।

✺ सेवा-

1] स्वमान की स्थिति रूपी सीट पर सेट रहो तो सर्व शक्तियां सेवा के लिए सदा हाज़िर अनुभव होंगी। आपके आर्डर के इन्तजार में होगी। तो वरदान और वर्से को कार्य में लगाओ। मालिक बन, योगयुक्त बन युक्तियुक्त सेवा सेवाधारियों से लो तो सदा राज़ी रहेंगे। बार-बार अर्जी नहीं डालेंगे।